क्या दो रोगी एक जैसे हो सकते हैं?

दुनिया में कभी भी दो व्यक्ति पूर्ण रूप से एक जैसे न तो कभी हुए हैं और न कभी भविष्य में एक-जैसे हो सकते हैं। उनकी शारीरिक संरचना, स्वभाव, आसपास के वातावरण की प्रतिक्रिया, कायिक स्थिति कभी भी समान नहीं हो सकती है। कभी-कभी उनकी संरचना में एकरूपता और समानता दिखने के बावजूद शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अवस्था में कुछ न कुछ तो अन्तर होता ही है। जब दो व्यक्ति एक-जैसे नहीं हो सकते हैं तो दो मधुमेह, रक्तचाप, हृदय, पाचन, श्वसन, नाड़ी संस्थान आदि किसी भी रोग के रोगी एक-जैसे कैसे हो सकते हैं?प्रमुख रोग के लक्षण समान होने के बावजूद सहयोगी रोगों की स्थिति एक जैसे नहीं हो सकती। अर्थात् प्रत्येक रोगी में रोग का परिवार अलग-अलग होता है। जब दो रोगी एक-जैसे नहीं हो सकते तो उनका उपचार एक-जैसा कैसे हो सकता है? क्या बाजार में उपलब्ध दवाइयाँ अथवा इंजेक्शन प्रत्येक रोगी विशेष के अनुरूप बनाये जाते हैं?दवा कैसे बनती है?कौन-कौनसे आवश्यक और कम उपयोगी अथवा अनावश्यक तत्व कितनी-कितनी मात्रा में होते हैं? इस बात का ज्ञान अथवा जानकारी उपचार करने वाले चिकित्सक को प्रायः नहीं होती है। क्या डॉक्टर दवा से पड़ने वाले दुष्प्रभावों का सही आंकलन कर सकते हैं?क्या दवा में आवश्यकता से विपरीत कम या अधिक तत्वों की मात्रा शरीर में असंतुलन तो पैदा नहीं करती? क्या दवाइयों का परीक्षण एक जैसे रोगियों, वातावरण और परिस्थितियों में किया जाता है?गणित का सिद्धांत है कि कोई भी समीकरण कुछ निश्चित स्थायी मापदण्ड होने पर ही सही समाधान कर सकता है, परन्तु दवाओं के परीक्षण में ऐसा असम्भव ही होता है। ऐसे परिणाम कभी भी एक जैसे नहीं हो सकते। जब तक उपचार प्रत्येक रोगी की आवश्यकतानुसार एवं उसको दी जाने वाली दवा का निर्माण रोगी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होगा तो उपचार कैसे पूर्ण, प्रभावशाली, स्थायी हो सकता है?मात्र प्रमुख लक्षणों को दबा कर रोग में राहत पाना ही उपचार का ध्येय नहीं होता।

– डॉ. चंचलमल चोरडिया

चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर,

थार हैण्डलुम के सामने, गोल बिल्ड़िग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)

(फोन) : 0291-2621454,2632267(घर), 2435471 (फैक्स),094141-34606(मोबाइल)

E-Mail :cmchordia.jodhpur@gmail.com

swachikitsa@therapist.net